124 भारत की समस्याएँ और संघ

भारत में भौतिक उन्नति सामान्य रूप से हो भी रही है और दिख भी रही है किन्तु समाज व्यवस्था लगातार कमजोर हो रही है। ग्यारह समस्याएँ ''(1) चोरी डकैती, (2) बलात्कार, (3) मिलावट, (4) जालसाजी, (5) हिंसा–आतंकवाद, (6) भ्रष्टाचार, (7) चरित्र पतन, (8) साम्प्रदायिकता, (9) जातीय कटुता (10) आर्थिक असमानता (11) श्रम शोषण'' लगातार बढ़ती ही जा रही हैं और भविष्य में भी इनका कोई समाधान नही दिख रहा। इसके विस्तार के कारणों पर गंभीर विचार मंथन हमारे चिन्तन का मुख्य विषय है।

भारत में अनेक संगठन धार्मिक हैं और अनक राजनैतिक। सामाजिक संगठन भी बहुत अधिक हैं जो चरित्र निर्माण के असामयिक प्रयत्नों में लगे हुए हैं। एकमात्र संघ ही ऐसा संगठन है जिसमें समाज की चिन्ता करने वाले लोगों का भारी मात्रा में समावेश हुआ। संघ के प्रति आम भारतीयों की आशाएँ भी जगीं और विश्वास भी। स्वतंत्रता के पूर्व संघ ने इस्लाम को समाज का सबसे बड़ा खतरा मानकर स्वयं को इस्लाम के विरूद्ध केन्द्रित किया। संघ ने राजनीति से दूर रहकर राजनीति पर नियंत्रण का भरपूर प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद संघ ने अपनी रणनीति बदली। उसने अपनी राजनीति से दूर रहने की नीति को छोड़कर राजनीति मं सक्रिय होने की नीति प्रारंभ कर दी और इस कार्य के लिये भो इस्लाम विरोध को मुख्य आधार घोषित कर दिया। इसके पूर्व इस्लाम पर अंकुश लगाना संघ का लक्ष्य था किन्तु इसके बाद संघ सत्ता संघर्ष के लिये इस्लाम विरोध को मार्ग के रूप में उपयोग करने लगा। सत्ता के स्वाद की कल्पना करते रहने से संघ में नये तरह की सक्रियता आई जिसमें समाज चिन्तक गौण और सत्ता के खिलाड़ी मुख्य होने लगे। इस्लाम में तो धर्म के सांगठनिक स्वरूप का हस्तक्षेप राजनीति में सदा ही होता रहा है किन्तु भारतीय संस्कृति में धर्म क गुणात्मक स्वरूप का ही राजनीति में समावेश हुआ है, सांगठनिक स्वरूप का नहीं। कभी ऐसा नहीं हुआ जब किसी शंकराचार्य या किसी अन्य धर्म प्रमुख ने राजकाज में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हस्तक्षेप किया हो। स्वतंत्रता के बाद आर्य समाज ने स्वयं को पूरी तरह दूर कर लिया। किन्तु संघ अपना राजनीति का लोभ संवरण नहीं कर सका। संघ के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन की यह सबसे अधिक गंभीर भूल थी कि उसने राजनीति में अप्रत्यक्ष रूप से कूदने का निर्णय लिया।

परिणाम जो होना था वही हुआ। कांग्रेस पार्टी से उसकी प्रतिद्वंद्विता हुई। कांग्रेस को सत्ता के लिय किसी विशेष चरित्र की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि स्वंतत्रता संघष और गांधी जी का नाम ही उसके लिये पर्याप्त था किन्तु संघ को तो इस्लाम विरोध के नाम पर नया ध्रुवीकरण करना था इसलिये उसकी प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस को न चाहते हुए भी इस्लाम के समर्थन में आना पड़ा। ज्यों ज्यों संघ की ताकत बढ़ी त्यों त्यों अन्य दलों का भी कांग्रेस और इस्लाम से गठजोड़ होता गया और राजनीति में सत्तावन वर्ष बीतते संघ के विरूद्ध सब लोग एकजुट हो गये। संघ राजनीति म इस्लाम विरोध के साथ साथ और दला की अपेक्षा चरित्र का अधिक पक्षधर रहा जिसके परिणाम स्वरूप चरित्र विरोधियों का भी जमावाड़ा संघ विरोधियों के पास इकट्ठा होने लगा। सत्ता संघर्ष में सफलता की जल्दी में संघ की राजनैतिक शाखा भाजपा ने चरित्र से कुछ कुछ समझौता किया और यहीं से चरित्र पतन का मार्ग और स्पष्ट हो गया। अब राजनीति में चरित्र की बात करने वाला कोई भी दल नहीं था। जो ऐसे व्यक्ति थे वे भी धीरे धीरे कमजोर होने लगे।

भारतीय राजनीति में स्पष्ट ध्रुवीकरण हुआ जिसमें एक ओंर इस्लाम विरोधी तथा चरित्र की चिन्ता करने वाले इकट्ठे हुए और दूसरी आर इस्लाम समर्थक तथा चरित्र की चिन्ता न करने वाले लोग रहे। इस्लाम का समर्थन कांग्रेस की इच्छा न होकर राजनैतिक मजबूरी थी और चरित्र पतन में समझौता संघ की इच्छा न होकर राजनैतिक मजबूरी रही। दोनों ने सत्ता के लोभ में नीतियों को छोड़ना स्वीकार कर लिया।

संघ ने सत्ता की हड़बड़ो में चिन्तन को भी पूरी तरह छोड़ दिया। इनमें शिविरों में तथा सर्वोच्च कोर ग्रुप की बैठकों में भी नीतियों की समीक्षा न करके कार्यक्रमों की समीक्षा होने लगी। आर्थिक नीति कभी बनी ही नहीं। समाज में हिंसा को प्रोत्साहन देने की स्वतंत्रता पूर्व की नीति की निरंतरता

बनी रही। संघ भूल गया कि स्वतंत्रता के बाद भारत में लोकतंत्र है और लोकतंत्र में हिंसा का कोई स्थान नहीं होता है। यदि कोई दल हिंसा का प्रत्यक्ष या परोक्ष भी समर्थन करता है तो यह पूरा पूरा संदेह होता है कि वह तानाशाही की दिशा में सोच रहा है। इसी तरह संघ अंध इस्लाम विरोध से इतना अधिक चिपट गया कि उसे समाज की अन्य दस समस्याओं की चिन्ता ही नहीं रही। परिणाम हुआ कि नमाज तो छूटी नहीं रोजा और गले पड़ गया। अर्थात् इस्लाम पर अंकुश में तो सफलता मिली नहीं, उल्टा, चरित्र पतन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अपराधोकरण आदि समस्याओं का और अधिक विस्तार हो गया। आज भारत में सामाजिक हिंसा का स्तर जितना बढ़ा हुआ है उसमें संघ की भूमिका किसी भी रूप से अन्य दलों से अलग नहीं है। अन्य दलों की इससे कोई बदनामी नहीं होती क्योंकि अन्य दलों ने अपनी पहचान के साथ चरित्र को कहीं जोड़ा ही नहीं है किन्तु यदि चरित्र पतन और इस्लाम का विस्तार होता है तो संघ को उसमें अपनी असफलता स्वीकार करनी चाहिये।

वर्तमान में भारत में कांग्रेस और भाजपा ही ऐसे दल हैं जिनमें चरित्र की आंशिक चर्चा होती है। अन्य सभी दल तो पूरी तरह चरित्र पफ हैं। कांग्रेस और भाजपा एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी है। परिणाम स्वरूप चरित्र प्रुफ दलों को लाभ उठाने का पूरा मैदान खाली पडा है। दोनो ही दल ऐसे दलो से समझौते करने और यहॉ तक कि खुशामद करने तक को मजबूर हैं। संघ प्रमुख जैसी हस्ती कुछ वर्ष पूर्व के घोषित मियॉ मुलायम के घर जाकर उनसे राजनैतिक चर्चा करे यह घटना मजबूरी को बिल्कुल स्पष्ट करती है। समाज के सामने तो कोई और विकल्प नहीं है। वह तो संघ का समर्थन करने को मजबूर है और संघ का हाल यह है कि सत्ता के मोह में उसने अपनी सारी लाज शर्म छोड़कर भाजपा को अपना लिया है। सत्ता लोलुपता के समक्ष संघ न समाज की चिन्ता कर रहा है न नीतियों की।

पिछले दिनों वाराणसी में नीतियों पर गंभीर विचार मंथन हुआ। उम्मीद थी कि संघ स्वयं दलगत राजनीति से पृथक होकर राजनीति और समाज के बीच मध्यस्थ के रूप में सामने आयेगा किन्तु समाज को उनके निर्णय से घोर निराशा हुई जब संघ ने भाजपा को परोक्ष समर्थन के स्थान पर प्रत्यक्ष नियंत्रण का नीतिगत निर्णय लिया। भाजपा में गुटबन्दी दूर होने का उसे लाभ मिलेगा। अब भाजपा कांग्रेस को कमजोर करके स्वयं को मजबूत कर सकेगी। सत्ता से संघ की और निकटता बढ़ेगी। भाजपा में धीरे–धीरे चरित्र की मात्रा सुधरेगी और संघ में धीरे – धीरे चरित्र की मात्रा घटेगी। अन्य दलों को अब और अधिक सुविधा हो जायेगी। अब कांग्रेस और भाजपा ऐसे दलों के सिद्धान्त , व्यवहार और आचरण की और अधिक अनदेखी करके उनसे समझौते करेंगे, उनकी चापलूसी करेंगे। समाज की रही सही आशा भी टूट जायगी।

इतने वर्षो बाद होने वाली संघ की नीतिगत चर्चा में भी समाज चिन्तकों पर सत्ता चिन्तक भारी पड़े। वहाँ तो विचार का मुददा यह बन गया कि संघ भाजपा से दूर हटकर किसी नये दल की रचना करे या भाजपा को ही पुनर्जीवित करे। दोनो ही विचार सत्ता से ही जुड़े हुए थे। प्रश्न उठता है कि समाज की चिन्ता कौन करेगा ? क्या भारत के नागरिकों को भविष्य में भी इसी तरह चरित्र पतन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और अपराधीकरण की वृद्धि को बरदाश्त करना होगा? क्या ऐसा संभव नहीं है कि संघ अल्पकाल के लिये स्वयं को सत्ता संघर्ष से दूर रहकर राजनीति पर अंकुश की दिशा में सक्रिय कर ले। क्या यह नहीं हो सकता कि कांग्रेस और भाजपा को गुण दोष के आधार पर एक दूसरे का समर्थन या विरोध की नीति पर चलने को मजबूर कर दिया जावे? मुझे तो यह कार्य असंभव नहीं दिखता। अपराधीकरण और चरित्र पतन की तेज रफ्तार गाड़ी पर नियंत्रण संभव है और यह नियंत्रण तभी लग सकता है जब संघ के भीतर सत्ता लोलुप जमात पर समाज प्रधान जमात भारी पड़े। दो टूक और कठोर फैसले लेने होंग। सत्ता में सुविधा भी है और आकर्षण भी किन्तु सुविधा और आकर्षण पर समाज की बली नहीं चढ़ाई जा सकती। अन्तिम रूप से सिद्ध हो चुका है कि सत्ता एक ऐसा खेल है जो कभी बन्द नहीं हो सकता। और इसका खामियाजा लगातार समाज को भोगना पड़ता है। बहुत हो चुका सत्ता की लुका छिपी का खेल। संघ के राजनीति निरपेक्ष लोगों को पूरी बेशर्मी से खड़े होकर सत्ता लोलुपों पर नियंत्रण करना होगा। संघ को इस्लाम विरोध तक सीमित न रहकर वर्तमान राजनैतिक पतन के विरूद्ध मोर्चा खोलना होगा। यदि संघ इस बात को नहीं समझा और भारत मे चरित्र पतन, भ्रष्टाचार, आंतकवाद और

इस्लामिक कट्टरता का विस्तार हुआ तो इसका सारा दोष संघ की सत्ता लिप्सा अर्थात् एकमात्र संघ पर जायेगा। यदि संघ इस कलंक से बचना चाहता है तो उसके पास दो ही मार्ग हैं (1) संघ सत्ता संघर्ष से किनारे होकर राजनीति पर नियंत्रण का प्रयास करे, (2) संघ चरित्र की चर्चा का ढांग बन्द करके स्वयं को धर्म और शुचिता के अग्रणी संरक्षक का दावा करना बन्द कर दे। यदि संघ की अन्य दलों की तरह ही शचिता से दूर हो जायगा तो उस पर कोई आरोप नहीं लगेगा। समाज कोई न कोई नया मार्ग खोज लेगा। अब भी समय है कि संघ भविष्य के संबंध में फिर से सोचकर कोई निर्णय करे।

कार्यालयीन प्रश्नों के उत्तर

प्रश्नः— ज्ञान तत्व अंक एक सौ तेइस में कृष्ण कुमार जी खन्ना के उत्तर में आपने लिखा है कि " अनियंत्रित अव्यवस्था नियंत्रण को पारदर्शी न्याय व्यवस्था पर वरीयता दो जायगी"। इसका अर्थ हुआ कि विशेष स्थिति में आप गुप्तचर न्याय भी शुरू कर सकते हैं। क्या आपका यही आशय है? क्या यह उचित है?

उत्तरः— आपने मेरा आशय ठीक समझा है। अब तक लोकतंत्र में गुप्तचर न्यायालय की कोई कल्पना नहीं की गई है। मैने लोक स्वराज्य प्रणाली में भी गुप्तचर न्ययालय की कल्पना की है। अव्यवस्था लोकतंत्र का बहुत बड़ा कलंक है। अव्यवस्था के कारण आम नागरिकों का लोकतंत्र के उपर से भी विश्वास उठने लगता है, जैसे की अभी भारत में हो रहा है। हमें लोकतंत्र का ऐसा स्वरूप खोजना होगा जिसमें लोक स्वराज्य भी हो ओर व्यवस्था भी हो। लोक स्वराज्य के विषय में तो मेरे प्रस्तावों पर बहुत सहमति है किन्तु अव्यवस्था को रोकने का कोई कारगर उपाय न तो अब तक खोजा जा सका है न ही कोई बता पा रहा है। मेरे विचार में विशेष स्थिति में, विशेष क्षेत्र में विशेष अवधि के लिये, एक विशेष प्रक्रिया के अन्तर्गत गुप्तचर न्यायालय को गुप्त ट्रायल के अधिकार देकर अव्यवस्था रोकी जा सकती है। पारदर्शिता यदि अनियंत्रित अव्यवस्था का कारण बनती है तो अव्यवस्था को रोकना ही होगा भले ही पारदर्शिता की बलि क्यों न चढ़ानी पड़े। व्यवस्था हमारा लक्ष्य है आर परदर्शिता मार्ग। हम अपना मार्ग तब तक नहीं छोड़ सकते जब तक लक्ष्य के विपरीत दिशा में वह मार्ग न हो। यदि अपराधियों के दण्ड की स्वाभाविक न्यायिक प्रणाली पूरी तरह छिन्न—भिन्न हो जावे तो उस पटरी पर लाना आवश्यक है।

ग प्रश्नः— कृष्ण कुमार जो खन्ना अपन अभियान के संरक्षक भी है और सलाहकार स्तंभ भी। उनकी यह टिप्पणी है कि आप चिन्तन तो बहुत सार्थक करते हैं। किन्तु सक्रियता शून्य हैं। खाली विचारों से आज तक न कुछ हुआ है न ही होगा। हमें संघर्ष करना होगा जो आपकी योजना में है ही नहीं। उनका यह भी कथन है कि आप भ्रष्टाचार के विरूद्ध कोई आंदोलन नहीं चलाते।

उत्तरः— मेरा सोच अन्य सब लोगों से बहुत भिन्न है। सबका यह मानना है कि प्रयत्न कम हुए हैं, चिन्तन बहुत। मेरा मानना है कि प्रयत्न बहुत हुए हैं और चिन्तन नगण्य। यह चिन्तन के अभाव का ही परिणाम है कि अधिकांश समस्याओं के समाधान में दो विपरीत प्रयास एक साथ सक्रिय होते है जिसका परिणाम शून्य हो जाता है क्योंकि वे दोनों प्रयास आपस में ही कटते रहते हैं। आज देश में अनेक असत्य धारणाएँ सत्य के समान स्थापित हो गई है । बिना गंभीर चिन्तन के न सत्य और असत्य का पृथक करना संभव है न ही सक्रियता की दो विपरीत धाराओं में उपयोगी और अनुपयोगी का ठीक ठीक चयन संभव है। मैंने सक्रियता के पूर्व लम्बा चिन्तन किया और तब पाया कि समाज में बढ़ रही अनेक समस्याओं में वृद्धि का कारण अनेक सज्जनों की गलत सक्रियता ही है। मुझे खुशी है कि मैं ऐसी सक्रियता से अब तक बचा रहा। अनेक संस्थाएँ इस भ्रम में हैं कि वे गंभीर चिन्तन करती है। मेरे विचार में उनकी यह सोंच गलत है क्योंकि उनका सारा चिन्तन सक्रियता की योजनाओं पर होता है नीतियों पर नहीं। कार्यक्रमों पर विचार

विमर्श नीतिगत चिन्तन नहीं माना जा सकता। भारत में ज्ञान यज्ञ मण्डल एकमात्र ऐसी संस्था है जो चिन्तन और सक्रियता का तालमेल बनाकर काम कर रही है। मैंने एकमात्र शब्द का उपयोग किया है। यदि किसी पाठक की नजर में कोई और हो तो बताने की कृपा करें।

मैं भ्रष्टाचार को एक सर्वाधिक खतरनाक बीमारी मानता हूँ। जब तक भ्रष्टाचार नहीं रूकेगा तब तक कोई भी प्रयत्न सफल नहीं हो सकते। खन्ना जी कई वर्षो से भ्रष्टाचार की रोकथाम में सक्रिय हैं। उनके प्रयत्न सामान्य परिणाम तो दे सकते है किन्तु विशेष नहीं। पोलियो के रोगियों का इलाज करने की अपेक्षा पोलियों के रोकथाम के टीके की खोज अधिक उपयोगी और परिणामदायक प्रयत्न है। खन्ना जी भ्रष्टाचार की रोकथाम के प्रयत्न में लगे है और मैंने भ्रष्टाचार समाप्ती के लिये एक टीका खोज निकाला है, जिसके अनुसार ''शासन के अधिकार दायित्व तथा हस्तक्षेप न्यूनतम करके परिवार क्षेत्र (गांव,शहर) जिला आदि में बांट देना चाहिये। मैं नहीं समझता की खन्ना जी के प्रयत्न कुछ ज्यादा परिणाम दे पायेंगे। मैं खन्ना जी के प्रयत्नों का समर्थक होते हुए भी उसमें सहयोगी नहीं क्योंकि मैं उस प्रयत्न की अपेक्षा अपने प्रयत्न को अधिक कठिन किन्तु परिणाम दायक समझता हूँ। भ्रष्टाचार के संबंध में मेरी और खन्ना जी की परिभाषाएँ बिल्कुल अलग अलग हैं। मैं पूरी तरह कानूनों का पालन करता हूँ किन्तु यदि समाज का कोई नागरिक समाज पर अनावश्यक कानूनों और टेक्सों के जाल में जकड़कर गुलाम बनाने वाली सरकार के कानूनों या टैक्स चोरी में लिप्त है तो मैं उस व्यक्ति की अपेक्षा सरकार को अधिक दोषी मानता हूँ जबकि खन्ना जी सरकार की अपेक्षा टैक्स चोरी करने वाले व्यक्ति को भी भ्रष्ट घाषित करने की भूल करते है। भ्रष्ट सरकार और भ्रष्ट नागरिक के बीच मैं भ्रष्ट सरकार को अधिक दोषी मानता हूँ और वे नागरिक को। खन्ना जी साधन शुद्धि को ही लक्ष्य से अधिक पवित्र समझते हैं और मै साधन शुद्धि को लक्ष्य प्राप्ति में बाधक नहीं बनने देता।

प्रश्नः— श्री अशोक भाई आगरा के प्रश्न के उत्तर में आपने N.A.P.M और N.A.L.M की चर्चा की है। दोनो मं क्या फर्क है?

उत्तरः— N.A.P.M का अर्थ है National Alliaince For peoples Movementऔर N.A.L.M का अर्थ है

National Alliaince For Lok Swaraj Movement

मेरे विचार में अष्पष्ट लक्ष्य वाले जन आंदोलनो का समूह एक नासमझी की बात है। जन आंदोलनों के एकत्रीकरण का कोई साफ साफ उद्देश्य दिखना चाहिये। एक संस्था बड़े बांधो के बिल्कुल विरूद्ध होकर नर्बदा बांध का विरोध करती है दूसरी ओर राजस्थान बांध के पानी के दूर तक वितरण के आंदोलन का भी समर्थन करती है। N.A.P.M के साथ ऐसे भी संगठन जुड़े हैं जो ग्राम पंचायतो को अधिकतम आर्थिक राजनैतिक अधिकार देने के पक्षधर हैं दूसरी ओर ऐसे भी कई संगठन है जो परिवार तक के पारिवारिक मामलों में सरकारी कानून बनवाने के लिय आंदोलन रत हैं। कई संगठन तो उद्योग धंधो के सरकारीकरण का इस सीमा तक समर्थन करते हैं जैसे कि वे जन संगठन न होकर सरकारी दलाल मात्र हों। जन आंदोलन दिशा विहीन होकर लक्ष्य बन जायगा तो अव्यवस्था को प्रोत्साहित करेगा। इसलिये मैने N.A.L.M नाम से लोक स्वराज्य की दिशा में जन आंदोलन का स्पष्ट लक्ष्य बताया है।

प्रश्नः— आपने अंक एक सौ तेइस में अशोक भाई के प्रश्न के उत्तर में लिखा कि ''संघ और इस्लाम से मेरे वैचारिक संबंध बहुत कटु रहे''। दूसरी ओर उसी के बाद आपने लिखा कि दोनों ने आप पर बहुत विश्वास किया। ये दोनो बातें एक साथ कैसे संभव है। मैने आपकी लिखी एक पुस्तक ज्ञान तत्व मंथन पढ़ी है।उसमें आपने साफ साफ लिखा है कि मुसलमान सारी दुनियॅा में धर्मिक मामलों में सर्वाधिक कट्टर होता है। क्या आप अब भी अपने उस कथन की पुष्टि करते है? यदि हॅा तो आप इस्लाम और संघ को एक ही तराजू पर कैसे तौल रहे हैं?

उत्तरः—इस्लाम सम्पूर्ण विश्व को अपने राजनैतिक साम्राज्य के अन्तर्गत लाने हेतु निरंतर प्रयत्न करता है। यही कारण है कि शिया और सुन्नी शासक भी धर्म के नाम पर एक दूसरे का खून बहाते रहते है। संघ का उद्देश्य वैचारिक हिन्दुत्व के प्रसार प्रचार तक सीमित नहीं है।

इसलिये मै दोनो के प्रयत्नों को लगभग एक समान मानता हूँ फिर भी इस्लाम को मैने धार्मिक रूप से अधिक कट्टर इसलिये माना क्योंकि अधिकांश मुसलमान, मुसलमान होने के आधार पर इस साम्राज्यवादी विचार से जुडा हुआ है जबकि अधिकांश हिन्दु , हिन्दु होने के आधार पर संघ के अभियान से बाहर है। बात यह भी है कि संघ का संघर्ष इस्लाम के प्रयत्नों के अनुकरण में शुरू है न कि संघ के अनूकरण में इस्लाम कट्टर हुआ।

संघ और इस्लाम, दोनो ही संगठन मुझे अपने प्रयत्नों की सफलता में बाधक मानतें रहें किन्तू उन्हें इस बात का पूरा पूरा विश्वास रहा कि मैं पूरी तरह तटस्थ हूँ अर्थात् किसी भी परिस्थिति में किसी का पक्ष नहीं लूंगा। दसरी बात यह भी थी कि मैं धार्मिक मामलों को छोडकर अन्य सभी मामलों में इस्लाम और संघ का भी एक विश्वस्त सहयोगी था। इस कारण से उनका मुझ पर बहूत विश्वास था। मैं समझता हूँ कि मेरे लिखने में कोई विरोधाभास न होकर एक यथार्थ मात्र था।

मैं गुजरात प्रकरण को समाज के यथार्थवादी चिन्तन के अभाव का एक आइना समझता हूँ, गोधारा ट्रेन की घटना के समय हजारो लोग वहॉ मौजूद थे। सब लोग दो विपरीत गूटो में बंट गये।बाहर से भी बडी संख्या मे लोग जॉच के लिये गये। जो भी लोग गये उनमें से अधिकांश पहले से ही तय करके गयें थें कि उन्हे क्या निष्कर्ष निकालना है। यदि कोई तटस्थ निष्कर्ष निकालने की हिम्मत किया तो उसे कड़ाई से दबा दिया गया। राजीव बोरा जी को तटस्थता के लिये कितनी डांट सुननी पड़ी यह मुझे पता है। अबोहर के सर्वोदय सम्मेलन में गुजरात सर्वोदय के एक पदाधिकारी ने गोधरा की घटना पर यथार्थ बताना शुरू किया तो उसे डॉट कर बिठा दिया गया कि वह कथन सर्वोदय की लाइन के विपरीत था। मुझे भारत म सत्य के नाम पर सत्य का गला घुटते देखकर दर्द होता है। संघ और मुसलमान तो इन मामलों में दो पक्ष है ही किन्तु स्वयं को तटस्थ कहने वालों की तटस्थता पर दुःख होता है। मैंने भी कई बार जाने का मन बनाया था, परन्तु नहीं जा सका, यदि गया होता तो अच्छा होता। कम से कम यथार्थ तो स्पष्ट करता और यदि जाता तो बुरा होता क्योंकि एक पक्ष मेरे विरूद्ध पक्षपात का भारी आरोप लगाता। मेरी हार्दिक इच्छा है कि समाज में यथार्थ वादी लोग सामने आकर सच कहने की हिम्मत करने की कोशिश करे।

प्रश्नः— आपने लिखा है कि सर्वोदय पर वाम पंथ का बहुत प्रभाव है। इस बात में कितनी सच्चाई है?

उत्तरः— स्वामी मुक्तानंद जी ने सर्वोदय के दो भाग किये, (1) सर्वसेवा संघ, (2) सर्वोदय। सर्वसेवा संघ एक संगठन है और सर्वोदय एक विचारधारा। सर्व सेवा संघ के उपर से नीचे तक पदाधिकारी होते है जो उसकी नीतियॉ और कार्यक्रम बनाते रहते है सर्वोदय की न कोई सदस्यता होती है न पदाधिकारी। गॉधी विनोबा जयप्रकाश के विचारों से प्रभावित कोई भी व्यक्ति सर्वोदयी हो सकता है। संघ के मामले में दोनों ही प्रकार के लोगो की सोच एक समान है किन्तु सर्वसेवा संघ के लोग संघ के मामले में अधिक मुखर और सतर्क रहते है। जबकि साधारण सर्वोदयी उतनी चिंता नहीं करता। सर्वोदय के लोगो ने कभी किसी संघ के कायकर्ता पर विश्वास भी किया तो वह विश्वास टीक नहीं सका। वाराणसी के राजघाट कार्यालय की घटना के बाद तो यह बात और भी अधिक मजबूत हुई। परिणाम हुआ की सर्वसेवा संघ, संघ विरोद्ध करते करते वामपंथियो का स्वाभाविक मित्र बन गया है। सर्वोदय पर वामपंथ का कोई प्रभाव नहीं है किन्तु सर्वसेवा संघ पर वामपंथ का भरपुर प्रभाव है।

अब सर्वोदय के सामने एक कठिनाई आने वाली है। वामपंथ के बंगाल संस्करण ने उलझन खड़ी कर दी है। वामपंथियो का सिद्धांतवादी धड़ा बंगाल के प्रयोग के साथ तालमेल नहीं कर पा रहा जबकि सत्ता रूढ़ वामपंथ बुद्धदेव भट्टाचार्य के साथ चटट्ान की तरह खड़ा है मेघा पाठकर ने बंगाल के प्रयोग के विरूद्ध अपना रूख साफ करके एक दिशा स्पष्ट की है। सर्वोदय भी सम्भवतः इस दिशा में जा सकता है किन्तु सर्वोदय के सामने उलझन तो है ही। बुद्धदेव भट्टाचार्य आर्थिक मामलों में यथार्थ को स्वीकार करने का मन बना चुके है और यदि ऐसा हुआ

तो भारत में वामपंथ की बुनियाद ही हिल जाएगी। भविष्य बताएगा कि सर्वादय ऐसे संकट से कैसे उबरता है। सर्वोदय का अर्थ सर्वोदय का स्वतंत्र कार्यकर्ता न होकर सर्वसेवा संघ से है।

प्रश्नः— आपने अंक एक सौ तेइस में लिखा है कि मुसलमान गरीबी रेखा की नीचे इक्का दुक्का ही है। आपकी यह बात पूरी तरह असत्य है। बहुत बड़ी संख्या में मुसलमान गरीबी रेखा के नीचे हैं।

उत्तरः— गरीब और गरीबी रेखा के नीचे होना अलग अलग विषय है। यदि कुल आबादी को चार भाग करें (1) सम्पन्न, (2) सामान्य, (3) गरीब, (4) विपन्न। मेरा व्यक्तित्व अनुभव है कि सम्पन्न में मुसलमान नगण्य, सामान्य में औसत, गरीब में औसत स अधिक और विपन्न में कम पाये जाते हैं। मैंने अपने क्षेत्र में देखा है कि अधिकांश आदिवासी हरिजन विपन्न स्थिति में गरीबी रेखा से नीचे जीवन जी रहे हैं। मुसलमान इन आदिवासी हरिजनों से अधिक मेहनती और होशियार होता हैं। मुसलमान छोटा मोटा मशीनी काम या ड्राइवर का काम करके पेट पालता है जबकि आदिवासी आम तौर पर ऐसा नहीं कर पाता। मुसलमान कहीं से कर्ज वगैरह लेकर भी जुगाड़ कर लेता है जो आदिवासी हरिजन नहीं कर पाते। मैं अपने क्षेत्र में ता यह बात दिखा सकता हूँ कि गरीब लोगों में मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक होते हुए भी गरीबी रेखा के नीचे में आदिवासी हरिजन ही अधिक है। हो सकता है कि हमारे क्षेत्र की अपेक्षा बाहर की स्थिति भिन्न भी हो क्योंकि इस संबंध में मेरे पास कोई अधिकृत जानकारी का अभाव है। मैं और खोज करने का प्रयास करूँगा तब पुनः स्पष्ट करूँगा।

पत्रोत्तर

प्रश्न—(1) आचार्य पंकज, महासचिव, व्यवस्था परिवर्तन अभियान।

आपके लेख और विचार ज्ञानतत्व में पढ़ता रहता हूँ। कई लोगों से इस संबध में सवाल जवाब भी चलता है। आप संघ, सर्वोदय, साम्यवाद , इस्लाम आदि की प्रायः चर्चा करते रहते हैं। इन सबके गुण दोषों पर भी आपकी पैनी कलम चलती रहती है। लगभग पचास वर्षो से आप आर्य समाज से जुड़े है किन्तु आप आर्य समाज की कभी न चर्चा करते हैं न आलोचना। क्या कारण हैं?

उत्तरः— संस्थाएँ कई तरीकों से काम करती हैं। कुछ का तरीका धार्मिक सामाजिक होता है तो कुछ का राजनैतिक सामाजिक। कुछ संस्थाएँ धर्मशास्त्र को मुख्य आधार बनाती हैं कुछ समाजशास्त्र को और कुछ राजनीतिशास्त्र को। आर्य समाज, गायत्र परिवार, बाबा रामदेव, आदि के सारे प्रयत्न मुख्य रूप से धर्मशास्त्र और समाजशास्त्र आधारित हैं। इनमें राजनीति या राजनीतिशास्त्र प्रायः शामिल नहीं होता। आर्य समाज ने स्वतंत्रता संघर्ष को समाज शास्त्र का विषय मानकर विदेशी टक्कर में गांधी जी का साथ दिया था। स्वतंत्रता के तत्काल बाद आर्य समाज राजनीति स अलग हो गया। आर्य समाज उसके बाद स्वामी जी द्वारा बताई गई राजार्य सभा तक नहीं बना सका। इस तरह इस पूरे समूह को कभी राजनीति में सक्रिय हस्तक्षेप की इच्छा नहीं हुई। दुसरी ओर इस्लाम, संघ, सर्वोदय, परोक्ष रूप से पूरी राजनीति करते हैं। भारत में सरकार किसकी हो यहॉ तक ये लोग राजनीति करते हैं। इनके कार्यो का तरीका सामाजिक राजनीति है जो राजनीति शास्त्र आर समाजशास्त्र को मिलाकर योजनाएँ बनाते हैं। चुनावों के समय ये लोग विधिवत् किसी दल के पक्ष विपक्ष में प्रस्ताव पारित करते हैं। वामपंथी और समाजवादी तो पूरी तरह राजनीति में लगे ही हैं। ये दोनो न धर्मशास्त्र से संबंध रखते हैं न समाजशास्त्र से।

मेरा सम्पूण चिन्तन और क्रिया राजनीतिशास्त्र के साथ समाजशास्त्र की दिशा में है, धर्मशास्त्र के साथ नहीं। राजनीति से दूर रहकर, राजनीति पर नियंत्रण या शासन के अधिकार दायित्व ओर कर्तव्य न्यूनतम होने के पक्ष में जनमत जागरण के शब्दों से ही बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे सारे प्रयत्ना में राजनीति मुख्य है भले ही वह दलगत या सत्ता की न हो। आर्य समाज का राजनीति से दूर रहने के कारण चर्चा से दूर रहना स्वाभाविक है दूसरी ओर अन्य सभी संगठनो का राजनीति से प्रत्यक्ष या परोक्ष संबंध होने के कारण उनकी चर्चा स्वाभाविक है। इसलिये मैं अपनी समालोचनाओं में गायत्री

परिवार, आर्य समाज आदि को बहुत कम ही शामिल करता हूँ। वैसे यदि इन संस्थाओं के विषय में भी कोई प्रश्न होगा तो मैं उत्तर देने का प्रयास करूँगा।

प्रश्न–(2) डॉ गुरूशरण, सम्पादक, आचार्य कुल मासिक, ग्वालियर, मध्यप्रदेश।

आपका कार्य ठीक दिशा में चल रहा है। आचार्य कुल आपका पूरा पूरा समर्थन करता है। 26 नवंबर को धर्म, समाज और राज्य विषय पर स्वतंत्र विचार गोष्ठी ज्ञान यज्ञ के रूप में सम्पन्न हुई होगी। ज्ञान तत्व आने से विवरण पता चलेगा।

उत्तरः– आचार्य कुल का सदा हो मार्गदर्शन मिलता रहा है। देहरादून में आचार्य कुल के राष्ट्रीय सम्मेलन में व्यवस्था परिवर्तन अभियान के प्रति जो संकल्प व्यक्त हुआ उससे हम सबका उत्साह बढ़ा है।

अनुसंधान के क्रम में भी पिछले दस पंद्रह वर्षो से आपका मार्ग दर्शन मुझे मिलता रहा है। आपने जिस

धैर्य और सहृदयता से मुझे गॉधी को समझने में सहायता की वह आप जैसा गॉधाी वादी ही कर सकता है अन्यथा कई गॉधी वादी तो मेरे मामूली प्रश्न उत्तर ही सहन नहीं कर पाते। आशा है कि दो जनवरी दिल्ली में आपके दर्शन होगें

(3) महेश भाई, विजयी पुर, गोपाल गंज, बिहार।

ज्ञान तत्व में आदरणीय बंग जी और पंकज जी के प्रश्नों और संकाओं का आपका बेबाक उत्तर पढ़कर मन आश्वस्थ हुआ। सर्वोदय के साथ आपका खुला विचार मंथन एक शुभ संकेत है।

सन् 1958 में अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर मैं सच्ची शिक्षा के खोज में निकल पडा था। तभी मुझे विनाबा जी की पुस्तक वेद सार पढ़ने को मिली। लिखा था कि ''अक्षर वेदों में मिलते है किन्तु अर्थ जीवन में खोजना पढ़ता है''। मैंने गांधी, विनोबा, जयप्रकाश को अब तक जैसा समझा है उसके अनुसार जो कुछ सामने है उसे देखों, परिक्षण करों और फिर उसका आकलन करते हुए आगे बढ़ो समझदारी यही है कि ''जो है'' उसको पड़ताल और परोक्षण किया जाये। यही पड़ताल आमूल क्रांति की अन्त दृष्टि प्रकट करेगी जिस परिवार या समाज की हम बात करते है उसे आज के परिप्रेक्ष्य में ढालने हेतु धैर्य और कठिन परिश्रम आवश्यक है। दुर्भाग्य की बात है कि सर्वोदय के कुछ लोग जोड़ने की अपेक्षा तोड़ने में अधिक व्यस्त है जबकि बुजुर्गो द्वारा बार बार कहा जाता है कि ''अच्छी अच्छी बातें सबकी ली जाये और बुरी बातें छोडी जावे, चाहे किसी की भी क्यों न हो। मुझे अच्छी तरह याद है कि सर्वोदय में स्व. प्रोफेसर गोरा ने किस तरह अकेलेपन में भी जाति और धर्म को कुड़ेदान के हवाले करके रचनात्मक व्यवस्था केन्द्रित क्रांति की दौड़ लगाई थी। ''जो है'' पर विचार करता हूँ तो मेरी नजरों के सामने वह गांधी आ जाता है जिसने दिल्ली की गद्दी की ताज पोशी को छोड़कर यथार्थ की साधना में कत्लेआम की ऑधी नापने के लिये कलकत्ता की हैदर मंजिल की दौड़ लगाई थी। जब भारत पर अपात काल थोपा गया तब भी मरियल से दिखने वाले तत्व ज्ञानी विनोबा ने पवनार आश्रम से अंहिसंक किन्तु भू मण्डल को कॅपा देने वाला आचार्य कोल रूपी शस्त्र इस देश तथा सर्वोदय को दिया था। आज यदि सर्वोदय महारथियों ने आचार्य कुल के उस नीहितार्थ को ठीक से समझा होता और जीवन में उसका अर्थ खोजा होता तो मुझे लगता है कि व्यवस्था परिवर्तन के लिये तथा यथा स्थिति को तोड़ने के लिये रामानुंजगंज में किसी बजरंगलाल को अवतार लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। मैं समझता हूँ कि बुद्धिजीवियों, विभिन्न संगठनों तथा समाज सेवी संस्थाओं को एक साथ जोड़ने का बजरंगलाल का प्रयास विनोबा जी के आचार्य कुल का ही रूपन्तरण है।

धर्म, मजहब, रिलीजन, पंथ, सम्प्रदाय, आदि क्या है? आप सामने वाला बुरा न माने इस डर से चापलूसी की भाषा का क्यों प्रयोग करें? किससे डर है आपको? क्या किसी प्रकार का वर्ग विभाजन समाज या व्यक्ति में सह अस्तित्व को बर्दाश्त करेगा? अभी पश्चिम बंगाल सरकार ने साम्यवादी चिन्ह से हजारों ऐसे चिकित्सकोय उपकरण मॅगाये जिनस अनेक लोगों को एड्स या हेपेटाइटस से जूझना पड़ रहा है। स्पष्ट है कि साम्यवादी बंगाल ने

साम्यवादी चिन्ह को उपकृत करने के लिये ही ऐसा खतरा उठाया। मेरा कहने का आशय है कि हम अक्षरों अर्थ जीवन में खोजें और वर्ग विभाजन के प्रयत्नों को असफल करें।

कर प्रणाली पर बंग जी की सलाह उचित है। परिवार के आर्थिक क्षमता अनुसार ही कर लगाना चाहिये। अमर्त्य सेन जी भी प्रसिद्ध अर्थशास्त्रीय हैं और नोबल पुरस्कार प्राप्त मो. युनुस भी। दोनों के अर्थ शास्त्रीय सिद्धान्त मेरे पड़ोसी कुदाल चलाकर पेट भरने वाले पर जब तक सार्थक प्रभाव न डाले तब तक निरर्थक है। इस संबंध में बजरंगलाल जी का दो प्रतिशत समान कर सिद्धांत और सब में समान बॅटवारा को बंग जी के संसोधनों के साथ जोड़कर तालमेल बिठाने से मेरे पड़ोसी कुदाल चलाने वाले के जीवन में कुछ आशा की किरण दिख सकती है

मान्यताऍं , प्रतिबद्धताएं, सिद्धांत और आदर्श हमेशा आदमी को भटकाओं में डालकर विभाजन, अलगाव की खेती करते है और हम आप जैसे समाज चिंतक, समाज शास्त्रीय धर्म प्रवर्तक, सम्प्रदाय पोशक परम्परा जोड़को की चॉदी कटती है। इसलिये जरूरत है मान्यता, आदर्श, सिद्धांत, निरपेक्ष, आमूल क्रांति की। जिसमें हर व्यक्ति सवालिया व्यक्तित्व की चलती फिरती किताब हो।

अन्य में मैं जितना सर्वोदय, इसके सोध परख निहितार्थ और दर्शन को समझ सका हूॅ। उसे यहॉ रखना चाहूॅगा सर्वोदय तंत्र है यथा स्थिति की गुलामी से मुक्ति का, न की गांधी जी के नवाहंन तथा एकादश पुराण के कर्मकाण्ड का। आज की महती आवश्यकता सर्वोदय के लिये यह होनी चाहिये की सर्वोदय तंत्र को आमूल सास्कृतिक स्वरूप में कैसे लाया जाये? और उसकी समझ तभी सर्वोदय की होगी जब पहले स्वयं को सिद्धांतो मान्यताओ हिन्दुओं मुसलमानों आदि आदि के गुलाम बनाने वाली मानसिकता को अपने खोज बिल के दायरे में लाने का मन बनावें। मुझे लगता है यथा स्थिति से भिड़ने के लिये यथा स्थिति कायम करने वाले इन विघ्वंसक मानको को समझा जाये।

एक अफसोस के साथ अपना दर्द मैं आपके सामने रख रहा हूॅ।

उत्तरः– आपने मेरे दर्द को समझा। मेरे दर्द ने आपके दिल में एसा दर्द पैदा किया कि आप एक प्रमुख सर्वोदयी हात हुए भी घेरे से बाहर सोचने को मजबूर हूये। मैं जो भी प्रयास कर रहा हूॅ वह विनोबा जी की अचार्य कुल की मूल अवधारणा के ही अनुरूप है सफलता मिलने के ही दो कारण होते है। (1) प्रयत्नों की कमी (2) नीतियों मं कमी। सर्वोदय और संघ इसे प्रयत्नों में कभी मानते है जबकि यह नीतियों में कमी है। मैं जब नीतियों पर चर्चा करता हूॅ तब दोनों को बूरा लगता है।

आज भारत सबसे बढ़ी समस्याऍं आंतकवाद का विस्तार और ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के समाप्ती के रूप में है इन समस्याआं पर अपना ध्यान केन्द्रीत करने के स्थान पर संघ परिवार मुसलमानों के पिछे पड़ है। और सर्वोदय संघ के। इराक और अमेरिका के संबधों पर बड़ी बड़ी चिन्ताऍं व्यक्त करते है। दुनिया में पानी की कमी हो सकती है इस पर भी खुब रिसर्च करते है पर्यावरण पर भी इनकी व्यापक चिन्ता देखते ही बनती है। किन्तु भय मुक्त शोषण मुक्त और शासन मुक्त समाज की दिशा में असफलता पर चर्चा भी नहीं करते। सर्वोदय के प्रमुख कर्णधारों में से एक रामजी सिंह स जब भी चर्चा हुई तो उन्होंने निर्णायक लहजे में कहा कि विचार बहुत हो चुका है, अब तो काम करने का समय है। मैंने उस समय भी कहा था और आज भी कह रहा हूॅ कि पहले नीतियों की समीक्षा करें तो सफलता अवश्य मिलेगी। सक्रियता का अभाव होता तो समाज हिंसा के स्थान पर कायरता की दिशा में जाता समाज में हिंसा का लगातार बढ़ना यह प्रमाणित करता है कि समाज को विश्वसनीय दिशा चाहिये।

गांधी, विनोबा, जयप्रकाश के विचारों में आज भी इतना दम है कि वे कहीं भी स्थापित हो सकते है। समाज में इन विचारों पर बहस प्रोत्साहित करने की जरूरत है। आज इनके समर्थक इनके विचारों का इस तरह पाठ करते है जिस तरह मेरा अनपढ़ भाई प्रतिदिन गीता का एक अध्याय पढ़ता है। मेरे भाई की श्रद्धा और समर्पण में कोई कमी नहीं किन्तु श्रद्धा और समर्पण के साथ साथ कुछ और भी तैयारी करनी पड़ेगी। मुझे पूरा पूरा विश्वास है कि संघ और सर्वोदय के सक्षम कार्यकर्ता नीतियों पर पुनर्विचार हेतु आगे आएगे।

(4) स्वामी मुक्तानंद साधु बेला हरिद्वार।

गांधी जी के देहावसान के बाद 1948 में ही सेवाग्राम में सर्वोदय समाज की घोषणा हुई। यह अंहिसक समाज रचना में विश्वास रखने वालों का खुला भाई चारा था विनोबा जी ने सर्वोदय समाज की व्याख्या करते हुए कहा था। यह एक सर्वतंत्र–स्वतंत्र खुला भाई चारा है इसकी सदस्यता नहीं है। जिसकी अहिंसक समाज रचना में आस्था है। वह सर्वोदय समाज का सेवक होगा।

सर्वसेवा संघ गांधी जी की रचनात्मक संस्थाओं का संघ बना। इस संघ के बुनियादी सदस्य को लोक सेवक कहा गया। संस्था के अनुशासन के अनुसार लोक सेवक की कुछ विशिष्ठ निष्ठायें हैं। सर्वसेवा संघ के संगठनात्मक ढांचे से सर्वोदय समाज का कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु जैसे राष्ट्रीय सेवक संघ ने हिन्दू शब्द को पकड़ लिया है। वैसे ही सर्वसेवा संघ ने सर्वोदय शब्द को पकड़ रखा है। जैसे आर.एस.एस तथा अन्य हिन्दू संस्थाओं के कारण हिन्दू समाज का जीवन–दर्शन विकृत हो रहा है, उसी प्रकार सर्व सेवा संघ के कारण सर्वोदय समाज की वैचारिक भूमिका ही खंडित हो गई है। सर्वादय समाज वह मंच है जहॉ व्यक्ति–समाज और प्रकृति के मध्य संतुलन की खुली चर्चा हो सके । किसी संस्थागत ढांचे में सर्वोदय समाज को बॉधने का प्रयास वैसा ही प्रयास है जैसे हिन्दु समाज को साम्प्रदायिक ढांचे में बॉधने के प्रयत्न हो रहे है। हिन्दु समाज ग्रंथ पंथ संत की प्रमाणिकता से भी बॅधा नहीं है उसी प्रकार सर्वोदय समाज किसी ग्रंथ–पंथ और संत का मुहताज नहीं है। विनोबा जी ने हिन्दू समाज की व्याख्या करते हुये कहा है–

हिंसा टूयते चिन्तम–तेन हिन्दुरितीरित

हिंसा से जिसका चित्त दुखित होता है वह हिन्दु की रिति है सर्वोदय समाज का आधार भी अहिंसक समाज रचना है। मैं अलग से आपके पास युग–धर्म पुस्तक भेज रहा हूॅ उस पृष्ठ 27 पर हिन्दु धर्म की व्याख्या है

प्रश्न (5) श्री हरिवंश मेहता, रामांनुजगंज, सरगुजा छत्तीसगढ़।

मैं लम्बे अरसे से ज्ञान तत्व का निःशुल्क पाठक रहा हूॅ और व्यक्तिगत 1983 से आपसे जुडा हूॅ। आपके मनोंभावो को पढने, समझने का पर्याप्त समय मिला ह। मैं किसी के निजीचरित्र, व्यवहार की ओर ध्यान न देकर उसके कर्म एवं वाणी पर ध्यान देता हूॅ। आप समाजिक उत्थान के लिए कृत संकल्पित हैं। आप एक ऐसे समाज, राष्ट्र व्यवस्था तथा इकाई मानव बनाने की ओर अग्रसर हो रहे है जहॉ क्षेत्रीयता, भाषा–विवाद, धर्म–सम्प्रदाय, जातिवाद, भाई–भतीजावाद लोभ लालच का कोई भेद न हो।परन्तू आपका दर्द समझने वालों की संख्या अपर्याप्त है। आप एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ की खोज में हैं जिसके आलोक में आगे बढकर अपनी सोच को ठोस कार्य रूप दे सकें। प्रथमतः आप एक ऐसे संविधान की रचना करना चाहते है जो सर्वथा निर्दोष हो और विश्व का कोई भी सविधान तूल्य न हो।

आपके ज्ञान तत्व का 116 वां अंक मेरे पास है। उसे आद्योप्तन्त पढा। इस अंक के प्रथम पृष्ठ पर ही प्रथम पंक्ति में आपने व्यक्ति के तीन प्रकार दर्शाए हैं। समझदार की संख्या नगण्य बताई है आपन। अब तक मैं आपको समझदार ही समझता रहा। क्या यह मेरी ना समझदारी हैं? आगे आपने लिखा कि शासन व्यवस्था में यदि शरीफ लोग बैठ जायेंगें तो अव्यवस्था फैल जायगी और चालाक लोग बैठ जायेंगे तो मालामाल हो जायेंगे। आगे आपने लिखा है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सविधान निर्माताओ में अधिकांश शरीफ थे। न उनमें चालाकी थी न समझदारी। आप ही बताइये कि जबकि आप एक नये एवं निर्दोष संविधान तैयार करने जा रहे है, आने वाले समय के लोग आपको किस प्रकार के व्यक्ति की सूची में रखेंगे। आगे आपने लिखा है कि शरीफ राजनीतिज्ञ समस्याओ का समाधान नही कर पाता और धूर्तकर सकता है। लेकिन करता नही। समझदार की संख्या नगण्य है। तो फिर कौन सा विकल्प हो। क्यों नही धुर्त को ही सर्व सम्मति से व्यवस्था चलाने की जिम्मेदारी सौंप दी जाय और उस पर अंकूश रखा जाय।

आखिर यह भी तो हमारी मजबुरी है। स्वतंत्र भारत के सविधान में सत्तर से भी ज्यादा बार संशोधन होना यह बताता है कि राजनेताओ की नींद पूरी नही होती तो वे सूर्य को उगने से रोक रखना चाहते है या फिर उसकी गति में परिवर्तन।

कृपया यह स्पष्ट करें कि क्या आपके सर्वे में अभी तक कुछ एसे लोगो के नाम आए है जो सर्वहित सर्वमति के रूप में व्यवस्था चला सकें। आपके लेख की भाष भाव गाभीर्य लिए होती है जो अप्रत्यक्ष पाठकों के समझ में नही आती। क्या आपका सविधान लचीला होगा या भविष्य की मांग को ठुकराने वाला? आपके द्वारा पेश सविधान का प्रारूप देखा है जिसमें कई पहलू अछुते रह गये। खैर अभी तो कई बार संशोधन परिमार्जन के रास्ते गुजरना बाकी है।

उत्तरः–आपने अपने पत्र में कई प्रश्न उठाये हैं। जिनके उत्तर ये है।

(1) आने वाले समय में लोग मुझे क्या समझेंगे यह मै नही, आने वाला समय बतायेगा।

(2) आपने विकल्प पूछा है। आप रामानुजगंज के निवासी है। आपने मेरा जीवन और नागरिकों से संबंध और व्यवहार देखा है। आपने देखा है कि रामानुजगंज तथा आस पास के लोग मेरी बात समझन को तैयार नही होते थे किन्तु मानने के लिए तैयार रहते थे। उसका परिणाम आपने देखा है। पूरे भारत का विकल्प यही है कि समझदार लोंगो के साथ शरीफ लोग चट्टान की तरह खडें हो जावें। वर्तमान व्यवस्था को बदलना आसान काम नही है किन्तु और कोई मार्ग भी नही है।

(3) आपने धुर्त को ही सारे अधिकार देने की बात कही। ऐसा तो वर्तमान समय में हो रहा है। किन्तु आपने लिखा है कि धुर्त को सारे अधिकार देकर हमारा अंकुश हो। यह अंकुश किसका हो और कैसे हो यह आपने नही बताया। आज तक ऐसा रास्ता ही नही निकला कि शक्तिशाली पर कमजोर अंकुश लगावे। इस संबंध में आप विस्तृत योजना लिखे तो आगे चचा होगी।

(4) आप किसी अच्छे आदमी को खोजकर सत्ता सौंपने का प्रयास बन्द कर दीजिए। दोष व्यक्ति में न होकर सत्ता में है। आपने रामानुजगंज में प्रत्यक्ष देखा है कि नगरपालिका में ईमानदारी का कीर्तिमान बनाने वाले विश्वनाथ केशरी टिक नही सके। दूसरी ओर शहर के अच्छ अच्छे करोडपति और ईमानदार भी वहॉ जाकर कौड़ियो के मोल बिक गये। जो ईमानदार रह सकते हैं। वे या तो सत्ता से दूर हो रहना चाहते हैं और यदि पहुॅच गये तो ईमानदारी को छोड़ देते हैं इसका तरीका तो सिर्फ यही है कि सत्ता के पास पावर कम से कम कर दिये जावें।

(5) आपने हम लोगों का प्रस्तावित सविधान पढ़ा है। मेरे विचार में उसमें कोई विषय छूटा नही है। आप लिखियेगा तब अगले विचार मंथन में शामिल करेंगे।

प्रश्न–(6) कृष्ण चन्द्र जी सहाय, आगरा, उत्तर प्रदेश।

ज्ञान तत्व पढ़ता रहता हूॅ। आपके पति विशेष स्नेह और समर्थन होने के कारण आपको एक सलाह दे रहा हूॅ। आप कई बार गांधी के उदाहरण देते है। गांधी जी ने एक लम्बें पत्र की आल्पीन निकालकर रख ली और पत्र कूड़ेदान में डाल दिया। भावार्थ यह कि जिसकी जितनी उपयोगिता हो उससे अधिक उपयोग नही हाता। मूक्तानन्द जी सरीखे विद्वान के अनावश्यक पत्र को छापकर पृष्ठ भरने की अपेक्षा गाधी जी की सलाह माननी अधिक उपयुक्त होगी।

उत्तर– मुक्ता नन्द जी एक स्थापित विद्वान है, सर्व सेवा संघ के राष्टीय अध्यक्ष रह चुके है तथा राष्ट्रीय महत्व के विषयो पर निरंतर चिन्तन करते रहते है। वे मेरे कुछ विषयो मे प्रखर आलोचक है किन्तु विरोधी या निन्दक नहीं। आलोचक प्रत्यक्ष आलोचना करता है, तर्कपूर्ण ढ़ंग से करता है, विरोधी प्रत्यक्ष आलोचना करता है किन्तु तर्क नही होते, निन्दक प्रत्यक्ष प्रशंसा और परोक्ष निन्दा करता है। मुक्तानन्द जी ने परोक्ष चर्चा में मेरी प्रशंसा

की है और प्रत्यक्ष आलोचना। मुझ उनके पत्र और उसके उत्तर देने मे खुशी होती है क्योकि मै विचार मंथन के पक्षधर हूँ विचार प्रसार का नही । मेरे विचार में गांधी जी भी आलोचनाओं का मुकाबला करते थे, भागते नही थे।

लेख (7) श्री अमर नाथ मिश्रा , पी.एच.डी. परवलपुर, नालंदा विहार।

ज्ञान तत्व के शुल्क संबंधी कार्यकाल सचिव पाठक जी का पत्र मिला। ज्ञान तत्व का बहुत वैचारिक उपयोग हो रहा है। मै शुल्क भी अवश्य भेजूँगा । किन्तु पाठक जी के पत्र की भाषा से मुक्षे बेहद कष्ट हुआ।

उत्तर– ज्ञान तत्व का उपयोग हमारा पहला उद्देश्य है और सदस्यता शुल्क उसका माध्यम है। दिल्ली कार्यालय आने के बाद खर्च के कई विभाग हो गये । इसलिये आर्थिक दृष्टि से ज्ञान तत्व को आत्म निर्भर बनाना होगा। ज्ञान तत्व पत्र प्रति वर्ष कापी सौ रूपया खर्च आता है। हम लोगा ने अब तक पचास रूपया शुल्क रखा है और वह भी सिर्फ सक्षम लोगो से ही। अब तय किया जा रहा है कि सक्षम पाठको से सौ रूपया वार्षिक या पांच सौ रूपया आजीवन भेजने का निवेदन किया जावे। अक्षम पाठक यदि पचास रूपया भी भेज दे तो प्रयाप्त है। जो भी नये नाम आते है उन्ह प्रारंभिक चार माह तक नमूने के रूप मे निःशुल्क भेजकर उसके बाद उनसे निवेदन किया जावे। इस तरह निः शुल्क भेजने मे जो अतिरिक्त खर्च होगा वह अन्य साथियो के दान से पूरा किया जावे।

आपके हमारे कार्यालय की भाषा से कष्ट पहुँचा । मैने कार्यालय सचिव जी से जानकारी ली तो पता चला कि उन्होने यह तीसरा पत्र लिखा था। संभव है कि पहले के दो पत्र आपको न मिले हों। आप इस पत्र को हमें भेज दीजियेगा तो हम देखेंगे कि सचिव जी से लिखने में आपकी गरिमा के प्रतिकूल कहाँ भूल हुई है। वैसे आपने स्वयं ही शुल्क भेजने की इच्छा व्यक्त की है उसके बाद कार्यालय से कोई पत्र जाने का प्रश्न ही नही उठता है।

प्रश्न (8)श्री ईश्वर दयाल जी, मुजफरपुर, राजगीर, बिहार।

आपने ज्ञान तत्व एक एक सौ बाइस में मेरे प्रश्न का उत्तर दिया। आपने जगजीवन बाबू और रामविलास पासवान की ओर इशारा किया किन्तु हजारो पन्डे पूजारीयो को नही देखा जो लगातार मनुकृत समाज व्यवस्था को आधार बनाकर समाज को जोंक की तरह चूस रहे हैं। जोक यदि स्तन पर चिपक जाये तो खुन ही पीती है। दुध नही, यह उसकी प्रवृति है। आपने जगजीवन राम और रामबिलास पासवान से अन्य अवणो के पक्ष में पद छोड़ने की सलाह नही दी। किन्तु आपने खानदानी पद पर चिपक रहे नेहरू परविार को यह सलाह नही दी। आज तक कितने सवर्णो ने योग्य अवर्णो के लिये पद खाली किया? शायद एक भी नहीं।

यदि आप जगजीवन बाबू द्वारा कथित रूप से अशुद्व की गई मूर्ति को धोने वालों को स्वर्ण प्रतिनिधि नहीं मानते तो उनके पैर छूकर नौकरी प्राप्त करने वालों को स्वर्ण प्रतिनिधि क्यों कर मानते हैं? आपने एक हरिजन अधिकारी द्वारा सवर्णो को आतंकित करने की घटना को प्रस्तुत करते समय भूल गये कि किस तरह सवर्ण आवर्णो पर लगातार अत्याचार करते रहे हैं और आज भी कर रहे हैं। यदि समाज व्यवस्था को टूटने से बचाना है तो जमीनी सच्चाई से आंख मिलानी होगी। शुतुर्मुगी नीति स्थायी नहीं हो सकती है।

जन्म आधारित जाति व्यवस्था के आधार मनुस्मृति में स्वर्ण धूर्तो ने ही डाले और आज भी आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग करके ऐसे धूर्त सवर्ण अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। क्या समाज व्यवस्था को मजबूत करने का ठेका वंचितो ने ही ले रखा है? जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था को आधार बनाकर समस्त श्रेष्ठ उत्पादनों को अपनी मिल्कियत घोषित करने वाले सवर्णो न इस समाज व्यवस्था को कितना मजबूत किया है? संघर्ष तो

शोषण वृत्ति की अनिवार्य परिणति है। संघर्ष टालना है तो धूर्त शोषकों से अपनी शोषण वृत्ति टालने को कहें। येन केन प्रकारेण सामन्ती मनोवृत्ति को बनाये रखना और वंचितो को समाज हित में संघष छोड़ने की सलाह देना कदापि न्याय संगत नहीं है।

शिक्षा और श्रम सम्बन्धी प्रश्न का भी आपने गोलमोल उत्तर दिया। मै यह जानना चाहता हूँ कि बौद्धिक श्रम को आप श्रम मानते हैं या नहीं? सर्व मान्य सिद्धान्त है कि शिक्षा प्रगति का सर्वश्रेष्ठ आधार है। किन्तु किसी न किसी बहाने शिक्षा व्यय में कटौती के प्रयास किये जाते रहे। अब आप साइकिल और कृषि उत्पादों का टैक्स समाप्त करने के लिये सम्पूर्ण शिक्षा व्यय को समाप्त करने की बात कहने लगे है। यानी शिक्षा बजट न हुआ गरीब की जोरू हो गई जिससे जब चाहे छेड़छाड़ कर लें। क्यों नहीं हम सब मिलकर उल जलूल खर्चो को समाप्त करने की आवाज लगाते हैं?

उत्तरः—मेरे विचार में समाज में दो ही वर्ग हैं (1) शरीफ, भले, दूसरे के दुख दूर करने वाले, न्याय प्रधान, कर्तव्य प्रधान, (2) धूर्त, अपराधी, शोषण करने वाले, अपनत्व प्रधान, अधिकार प्रधान। पहले प्रकार के लोग जाति, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता, उम्र, लिंग गरीब अमीर उत्पादक उपभोक्ता के वर्ग भेद से दूर हटकर गुण दोष के आधार पर उचित अनुचित का निष्कर्ष निकालते हैं जबकि दूसरे प्रकार के लोग गुण दोष की अपेक्षा अन्य आठ आधारां पर निष्कर्ष निकालने को प्राथमिकता देते हैं। पहले प्रकार की श्रेणी में सवर्ण और अवर्ण दोनों ही प्रकार के लोग आते हैं। दूसरे प्रकार में भी इसी तरह सवर्ण अवर्ण दोनो प्रकार के लोग शामिल होते हैं।

दूसरे प्रकार के लोगों ने हमेशा ही पहले प्रकार के लोगों का शोषण किया। इन लोगों ने शोषाण के क्रम में ही कुछ लोगों को सदा सदा के लिये जातीय आधार पर शोषितों की श्रेणी में डाल दिया। पहले प्रकार के कुछ सवर्णो के सहयोग से अवर्णो ने इस शोषण के विरूद्ध प्रयत्न किये। ऐसा सहयोग करने वालों में मैं शामिल था। मैं आर्य समाज का रहा आर बाल्यकाल में छूआछूत का प्रत्यक्ष विरोध करने के कारण सवर्ण अत्याचार का लम्बे समय तक शिकार रहा। मुझे यह अंदाज नहीं था कि हमारे संघर्ष का लाभ धूर्त अवर्ण उठा लेंगे और पहले प्रकार के अवर्णो का शोषण यथावत् जारी रहेगा। मैंने अब समझा कि जोंक जोंक ही होती है। वह खून ही पीती है दूध नहीं। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि उक्त जोंक खून पी पीकर लाल हो गई है या खून की प्यासी काली है। पहले सवर्ण लाल जोंक दोनों स्तनों पर चिपक कर खून पी रही थी। अब एक स्तन पर काली जाक ने अधिकार कर लिया है। श्रम प्रधान, गरीब, ग्रामीण, अनपढ़, पहले प्रकार का बेचारा अवर्ण अब भी जोंक मुक्ति की प्रतीक्षा में छटपटा रहा है भले ही पहले उसके अधिकारों के शोषण पर पारिवारिक नेहरू परिवार और गोविन्द वल्लभ पत परिवार का एकाधिकार था, अब उस एकाधिकार को तोडकर उसमें जगजीवनराम और पासवान भी शामिल हो गये हैं। मैं नहीं समझ सका कि दूसरे वर्ग में शोषण अधिकार के जाति बदलाव से पहला वर्ग कितना लाभान्वित हुआ। आपने पूछा है कि आज तक कितने सवर्णो ने योग्य अवर्णो के लिये पद खाली किया? मेरे विचार से किसी ने भी नहीं। मेरा प्रश्न है कि आज तक कितने अवर्णो ने सक्षम होने के बाद अक्षम योग्य अवर्णो के लिये जगह खाली की? शायद एक भी नहीं। प्रश्न सवर्ण अवर्ण का न है न होना चाहिये? प्रश्न यह है कि शरीफ अवर्ण का जोंको से पिण्ड कैसे छूटेगा। प्रश्न यह नहीं की खून चूसने वाला जोंक सवर्ण है या अवर्ण।

मैं तो घोषित रूप से उस श्रेणी में हूँ जिसने ऐसे अवर्णो के लिये पहले ही संघर्ष किया था और अब भी कर रहें हैं। मुझे यह पता नहीं था कि लाल जोंके का स्थान काली जोंक ले लेंगी। आप (ईश्वर जी) की पृष्ठभूमि पता लगने पर ही मैं निश्चय कर पाउॅगा। सवर्णो के लम्बे इतिहास को देखते हुए आपके मन मे गुस्सा स्वाभाविक है चाहे आप सवर्ण हों या अवर्ण। किन्तु लाभ वंचित अवर्णो के स्थान पर लाभ प्राप्त अवर्णो के प्रति आपकी दिखती सहानुभूति से कुछ संशय पैदा होता है। मैं आपसे सहमत हूँ कि ''संघर्ष टालना है तो धूर्त शोषकों से अपनी शोषण वृत्ति टालने को कहें। येन केन प्रकारेण सामन्ती मनोवृत्ति को बनाये रखना और वंचितो को समाज हित में संघर्ष छोड़ने की सलाह देना कदापि न्याय संगत नहीं है''। आपके उक्त कथन अनुसार रामविलास पासवान और घूरहू भुइयां में से कौन वंचित है यह आप तय करें। सवर्णो के विरोध के नाम पर घूरहू भुइयॉ में से कौन वंचित

है यह आप तय करें। सवर्णो के विरोध के नाम पर घूरहू भुइयाँ को अपने अधिकारों से वंचित करके पासवान जैसों का समर्थन किस सीमा तक आपके कथन से मेल खाता है? मै स्पष्ट हूँ क्योंकि मेरे विचार में वंचित अवर्णो को प्राथमिकता मिलनी ही चाहिये।

जिस तरह जाति के नाम पर कुछ अवर्णो ने बहुसंख्य वंचित अवर्णो के शोषण का मार्ग तलाश लिया ओर अपने शोषण को न्यायसंगत बताने के लिये हर समय सवर्णो को गाली देने का घिसा पिटा राग अलापते रहते हैं उसी तरह श्रम का शोषण करने के लिये बुद्धिजीवियों ने शिक्षा को अपना आधार बनाया है। श्रम मूल है और शिक्षा मूल के विकास का आधार। श्रम का मूल आधार है रोटी, कपड़ा और मकान की एक सीमित मात्रा। शिक्षा श्रम की सुविधा और विकास की आवश्यकता तो हो सकती है किन्तु रोटी, कपड़ा और मकान का स्थान नहीं ले सकती। श्रम केवल शारीरिक ही होता है बौद्धिक श्रम, शारीरिक श्रम, शोषण के निमित्त श्रम, की परिभाषा में घुसपैठ है। पराने जमाने में भी ब्राम्हण दिन–रात बौद्धिक कार्य किया करते थे, किन्तु श्रमजीवियों मं उनकी तुलना नहीं होती थी। श्रमजीवी होने का अर्थ बुद्धिहीन नहीं है और न ही बुद्धिजीवी होने का अर्थ श्रम हीन है। किन्तु जिनकी जीविका में शरीरिक श्रम प्रधान है बुद्धि गौण व श्रमजीवी हैं। और जिनकी जीविका में बुद्धि का ज्यादा उपयोग है, शारीरिक श्रम का कम वे बुद्धिजीवी हैं। अब तक श्रम शोषकों ने जो षड़यंत्र किया है अब हम लोगों ने उसे चुनौती देनी शुरू कर दी है।

श्रमजीवी यह अपेक्षा करते थे कि बुद्धिजीवी अपना पेट भरने के बाद श्रमजीवियों को रोटी का एक टुकड़ा उनकी सहायतार्थ भी उपलब्ध करा देंगे। उनकी यह भो सोच थो कि बुद्धिजीवी अपने मूल्य के साथ–साथ श्रम मूल्य वृद्धि का भी मार्ग बनाते रहेंगे। बुद्धिजीवीयो ने श्रमजीवीयो की सहायता करने की अपेक्षा उनके उत्पादन और उपभोग की वस्तूओ पर कर लगा दिया। श्रम का मुल्य न बढ़े इसके लिये कृत्रिम उर्जा बना ली और कृत्रिम उर्जा कों मूल आवश्यकता में शामिल कर लिया। आपका कथन है कि शिक्षा पर बजट कम न करके श्रम सहायता के लिये अन्य फालतू खर्च कम कर दिये जावें। मेरा कहना है कि श्रम सहायता तो तत्काल प्रारंभ कर दे साथ ही शिक्षा का बजट बढ़ावे या कृत्रिम उर्जा सब्सीड़ी बढ़ावे। आप चादॅ पर जावें या एटम बम बनाये यह तय करना बुद्विजीवियो का काम है न कि श्रमजीवीयो का। श्रमजीवीयो कि एक ही मांग हैं कि उन्हे न्युनतम चार सौ रूपया प्रतिमाह प्रति व्यक्ति जीवन भत्ता मिले श्रम की मांग और मुल्य एक सौ रूपया प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति की गारंटी हो तथा उनके उपभोग और उत्पादनो पर कोई टैक्स न लगे। बाकी आप क्या घटाते और बढ़ाते है या उनका विषय नही यदि इसलिये कृत्रिम उर्जा का मूल्य दो गुना भी करना पड़े या शिक्षा और स्वास्थ्य का बजट शुन्य भी करना पड़े तो करें। साइकिल पर भारी कर लगाकर रसोई गैस को छूट देना या उच्च शिक्षा पर खर्च करने की वकालत अब सहन नही की जा सकती है। आपके कथन में मेरा संशोधन है कि '' श्रम क्या हुआ गरीब की जोरू हो गई जिससे जो चाहे जब चाह छेड़छाड़ कर ले''। गरीबी रेखा को तत्काल समाप्त करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हैं। इसमे शिक्षा या किसी अन्य बौद्विक बाधा के विरूद्व हम कमर कस कर खड़े हैं। इस संबंध में भी हमारी भूमिका स्पष्ट है। आपकी भूमिका का पता नही कि आप श्रम और बुद्वि के बीच श्रम को न्याय के विषय में क्या सोचतें है।

उत्तरार्ध

प्रश्नः–व्यवस्था परिवर्तन अभियान की आरक्षण के संबंध में नीति क्या है? बजरंग मुनि जी तो आरक्षण के बिल्कूल विरूद्व है। व्यवस्था परिवर्तन अभियान जातीय आरक्षण के ही विरूद्व है या महिला आरक्षण के भी विरूद्व हैं?

उत्तरः– व्यवस्था परिवर्तन अभियान,लोक स्वराज्य मंच और श्रम शोषण मुक्ति अभियान तीन ऐसे संगठन हैं जो बिल्कुल भिन्न स्वरूप कें है किन्तु एक ही कार्यालय से सुचालित हैं। बजरंग मुनि जी तीनो संगठनो को सहायता करते है और मांगने पर सलाह भी देतें है किन्तु वे संगठन में शामिल नही हैं।

आरक्षण के समर्थन या विरोध से इन तीनो सगठनो का कोई संबंध नही है क्योकि यह इन तीनो का विषय ही नही है।

व्यवस्था परिवर्तन अभियान राजनीति से दुर रहकर राजनीति पर नियंत्रण के प्रयास तक सीमीत है। अन्य किसी भी मुद्दे पर यह संगठन न विचार मंथन करता है न ही समर्थन या विरोध। लोक स्वराज्य मंच शासन का समाज में हस्तक्षेप कम से कम करने के प्रयत्न तक सीमित है। वह भी आरक्षण पर कोई मत नही रखता। श्रम शोषण मुक्ति अभियान बुद्वि और धन के श्रम के विरूद्व असंतुलन को सतुलित करने तक सीमित है। यह भी जातीय आरक्षण या महिला आरक्षण के पक्ष विपक्ष से दूर है। बजरंग मुनि जी यदि आरक्षण के संबंध में कोई विचार रखते है तो उसका उत्तर वे ज्ञान तत्व के पूवार्ध में दे सकते है आप उनसे पूछ सकते है। हमारे कार्यालय का इस प्रश्न से कोई संबंध नही है।

वैसे बजरंग मुनि जी निरंतर विचार मंथन करते रहते है। उन्होने अपने जीवन में अब तक तीन निष्कर्ष निकाल लिये है–

(1) भारत में अल्पसंख्यक राजनेताओ ने बहुसंख्यक समाज को गुलाम बनाकर रखा है। इस गुलामी से मुक्ति के गंभीर प्रयत्न आवश्यक हैं।

(2) लोकतंत्र की विकृत परिभाषा लोक नियुक्त तंत्र हैं। इसे लोक नियत्रित तंत्र होना चाहिये। ऐसा परिवर्तन सिर्फ भारत ही नही सम्पूर्ण विश्व में होना चाहिये।

(3) बद्वि और धन ने श्रम शोषण के उद्देश्य से सदा ही सस्ती कृत्रिम उर्जा का नारा दिया है। भारत की अर्थव्यवस्था में ऐसा आमूल परिवर्तन हो कि श्रम मूल्य बढ़े गरीबी रेखा के नीचे वालो को जीवन भत्ता मिले और आवश्यक वस्तूओ को पूरी तरह कर मुक्त कर दें।

इन तीना के अतिरिक्त अनेक विषयो पर मनि जी निरंतर विचार मंथन करते रहते है जो ज्ञान तत्व पुवार्ध मे प्रकाशित होता है आवश्यक नही कि यह उनका अंतिम विचार हो। आरक्षण के पक्ष विपक्ष मे विचार रखने का क्रम भी विचार मंथन प्रक्रिया का अंग है अन्तिम नही। आरक्षण के विषय मे व जो भी विचार रखते है वे उनके व्यक्तिगत है ज्ञान यज्ञ मण्डल के नही और व्यवस्था परिवर्तन अभियान का अन्य मूद्दो पर पक्ष विपक्ष विषय हो नही है।

दिनांक 26 नवंबर को कार्यालय में ज्ञान यज्ञ और बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में बीस लोग शामिल हुए। दोपहर ग्यारह बजे से बैठक प्रारभं हुई। तय हुआ कि 30 जनवरी को संकल्प पत्र समपर्ण का कार्य पूरा किया जाय। सभी संकल्प पत्र इसके पूर्व ही एकत्रित कर लिया जायं।

बलरंग मुनि जी की संभावित एक माह की यात्रा की तिथियो अगली बैठक में घोषित हो। यह यात्रा अप्रैल माह में होनी है। यात्रा के मार्ग का भी निर्धारण दो जनवरी की बैठक में कर लेना उचित होगा। यदि पूरा न हो तब भी अनुमान से बन जावें। लोक सविधान सभा के नाम चयन का काम भी प्रारंभ कर दें। ज्ञान तत्व की संख्या तेज गति से बढ़ाई जावे। इसके लिये निःशुल्क 4 से 6 माह भेजकर ग्राहक बनाने की प्रेरणा दी जावे। सभी पाठक ऐसे नाम अधिक से अधिक भेंजे। शूल्क पचास रूपया से बढ़ाकर सौ रूपया वार्षिक, पांच सौ आजिवन कर दें किन्तू जो न दे सके उन्हे पचास रूपया में भी दिया जावे। लोक स्वराज्य मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजनरायण गुप्ता का सुझाव था कि ज्ञान तत्व हाकर के माध्यम से बिकवाया जावें। नमुना के तौर पर बरेली से शुरू करना तय हुआ। पंकज जी की एक माह की उत्तर प्रदेश यात्रा 28 नवंबर से 31 दिसंबर की है इसके बाद की यात्रा का भी कार्यक्रम बनना चाहिये। अमर सिंह जी ने राजस्थान में यात्रा की इच्छा व्यक्त की।अब तक 30 संरक्षक बन चूके है। और बढ़ाये जाय।

2.30 बजे से यज्ञ हुआ और तीन बजे यज्ञ पूरा हुआ। इसके बाद धर्म समाज और राज्य विषय पर सबने अपने अपने विचार रखे। इस विषय पर एक लेख भी अगले अंको मे लिखना तय हुआ। अगली बैठक 2 जनवरी मंगलवार को होनी तय हुइ। चर्चा का विषय तय हुआ श्रम, बुद्वि और धन। 6 बजे बैठक समाप्त हुई।

दो तीन अक्टूबर को सम्पन्न बैठक में संगठन के स्वरूप पर चर्चा के समय निकले निष्कर्ष ज्ञान तत्व अंक एक सौ इक्कीस मे गये है।

अब तक किसी भी जिले की कोई प्रगति रिर्पोट नही आई है। कितने विकास खडो मे काम हुआ सूचना प्रत्येक माह की बैठक में आप स्वयं या आपकी ओर से हमे देनी है। जिन जिलो के विकास खड़ो में एक एक नाम घोषित हो जायगा उन्ही जिलो मे बजरंगमुनि जी की यात्रा होगी अन्य में

नही। संकल्प पत्र भी अभी महावीर जी तथा जगपाल सिंह जी के प्रयास से करीब एक हजार कार्यालय को मिले है। संकल्प पत्र का राष्ट्रीय प्रभार वी के. सूरी जी को दिया गया है। वे भी इस दिशा में बहुत सक्रिय हैं।ज्ञान तत्व के सःशुल्क ग्राहक या निःशुल्क पाठको की बड़ी सुची अशोक त्रिपाठी जी की मिली हैं। अन्य सभी स्थानो से संकल्प पत्र ब्लाक गठन या ज्ञान तत्व सूची का अभी तक अभाव हैं। आशा है कि शीघ्र मिलेगी जिससे अगली बैठक में उस पर चर्चा हो सके ।

––00––